

संतान सप्तमी व्रत कथा

Santan Saptami Vrat Katha (मुक्ताभरण व्रत)

श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर को यह कथा सुनाई थी। उन्होंने बताया कि एक बार मथुरा में लोमश ऋषि पधारे। माता देवकी और पिता वसुदेव ने श्रद्धा से उनकी सेवा की। देवकी के कई पुत्रों को कंस ने जन्म लेते ही मार दिया था, और वे इस दुख से टूटी हुई थीं। ऋषि ने उन्हें ढाढ़स बँधाया और संतान सप्तमी का व्रत करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अयोध्या के राजा नहुष की रानी चंद्रमुखी ने भी यह व्रत किया था। देवकी ने पूरी विधि पूछी, तब ऋषि ने पूजन का तरीका और यह कथा सुनाई।

अयोध्या में राजा नहुष राज करते थे। उनकी रानी चंद्रमुखी की गहरी मित्रता नगर के ब्राह्मण विष्णुदत्त की पत्नी रूपवती से थी। एक दिन दोनों सखियाँ सरयू में स्नान करने गईं। वहाँ कुछ स्त्रियाँ मिट्टी से शिव-पार्वती की मूर्ति बनाकर पूजा कर रही थीं। दोनों ने पूछा कि यह कौन-सा व्रत है। उन स्त्रियों ने बताया कि यह मुक्ताभरण, यानी संतान सप्तमी का व्रत है। यह सुख और संतान देने वाला माना जाता है। शिवजी के नाम का डोरा बाँधकर वे जीवनभर यह व्रत करने का संकल्प लेती हैं।

चंद्रमुखी और रूपवती ने भी जीवनभर व्रत करने का संकल्प लिया और शिवजी के नाम का डोरा बाँध लिया। पर घर लौटकर दोनों अपना संकल्प भूल गईं। मान्यता है कि इसी भूल के कारण अगले जन्मों में रानी को वानरी और ब्राह्मणी को मुर्गी की योनि मिली। समय बीतने पर दोनों फिर मनुष्य रूप में जन्मीं। इस बार चंद्रमुखी मथुरा के राजा पृथ्वीनाथ की रानी ईश्वरी बनीं और रूपवती ब्राह्मण कन्या भूषणा, जिसका विवाह राजपुरोहित अग्निमुखी से हुआ। इस जन्म में भी दोनों में गहरा प्रेम रहा।

भूषणा को पिछले जन्म का व्रत याद आ गया और उसने नियम से उसे किया। उसके आठ स्वस्थ पुत्र हुए। रानी ईश्वरी व्रत भूली रहीं। उन्हें बड़ी उम्र में एक पुत्र हुआ, जो बोल और सुन नहीं सकता था, और नौ वर्ष का होकर चल बसा। एक दिन भूषणा शोक जताने रानी से मिलने आई। उसके सुंदर पुत्रों को देखकर रानी के मन में ईर्ष्या जाग उठी। उन्होंने बच्चों के भोजन में विष मिलवा दिया, पर कथा के अनुसार व्रत के प्रभाव से उन्हें कुछ नहीं हुआ।

रानी का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने सेवकों से बच्चों को यमुना के गहरे जल में डुबोने को कहा, फिर जल्लादों को बुलवाया, पर हर बार बच्चे बच गए। यह देखकर रानी हैरान रह गई। उन्होंने भूषणा को बुलाकर अपनी गलती मानी और क्षमा माँगी, फिर पूछा कि तुम्हारे बच्चे हर बार कैसे बच जाते हैं।

भूषणा ने कहा, "क्या आपको पिछला जन्म याद नहीं? तब आप राजा नहुष की रानी थीं और मैं आपकी सखी। हम दोनों ने शिवजी का डोरा बाँधकर संतान सप्तमी का व्रत करने का संकल्प लिया था, पर भूल गईं। उसी भूल का फल हमें अनेक योनियों में भटकना पड़ा। मुझे अब वह व्रत याद आया, इसलिए मैंने उसे किया।" यह सुनकर रानी ईश्वरी ने भी विधि से मुक्ताभरण व्रत किया। कथा के अनुसार उसके प्रभाव से उन्हें एक सुंदर पुत्र की प्राप्ति हुई। तभी से संतान की रक्षा और उसके सुख-समृद्ध जीवन की कामना से यह व्रत किया जाने लगा।

लोमश ऋषि ने देवकी से कहा कि तुम भी श्रद्धा से यह व्रत करो। इस प्रकार कथा पूरी होती है। बोलिए, शिव-पार्वती की जय।